सत्य साहित्य

वर्ष 4 / अंक 3
अप्रैल 2021
Year 4/ No. 3
April
2021

जय जय राम

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

104

मुझे अपनी शरण में ले लो राम
सुख धाम, चरणा में ले लो राम ॥

(1) तुम्हीं मात पिता सुत भ्रात सखा,
तू नाथ, अनाथ का हाथ रखा,
करुणाकर तारन हार प्रभु,
अब पार करणा में ले लो राम ॥ मुझे...

(2) तुम पापी पतित अधम तारे,
शरणागत जो अपनाया हारे।
मैं बुरा सही, पर गैर नहीं
बस उन पतितन में ले लो राम ॥ मुझे...

(3) मैं ज्ञान-हीन - मति-हीन सही,
कृतघ्न निर्धन, प्रीति हीन सही।
नरक परखन की कुछ ओर नहीं,
हरि-रखवारे ध्यान में ले लो राम ॥ मुझे...

(5) यह दुर्लभ मानस देह मिली,
अब होगा कृपा तो साँझ ढली
निर्दोष जनम तो जी न सका,
तो मुझे मरण में ले लो राम ॥ मुझे...

(परम पूजनीय महाराज जी की भजन डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- अवतरण दिवस की बधाई
- 'राम–कृपा'
- श्रीरामशरणम्, एक ऐतिहासिक विवरण : गुरदासपुर
- अनुभूतियाँ
- विभिन्न केन्द्रों से
- कैलेण्डर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य
मूल्य (Price) ₹5

अवतरण दिवस की बधाई!

परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज एवं परम पूजनीय श्री महाराज जी के अवतरण दिवस की लख लख बधाई।

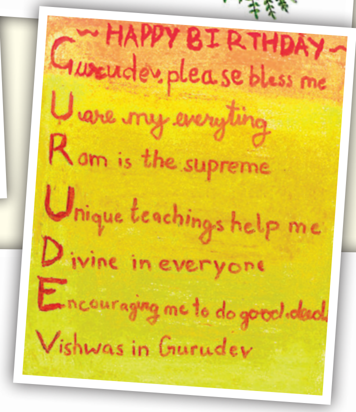

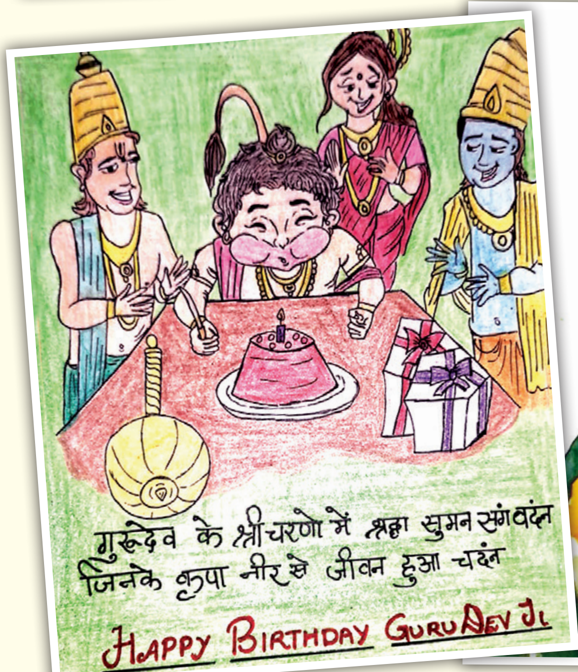

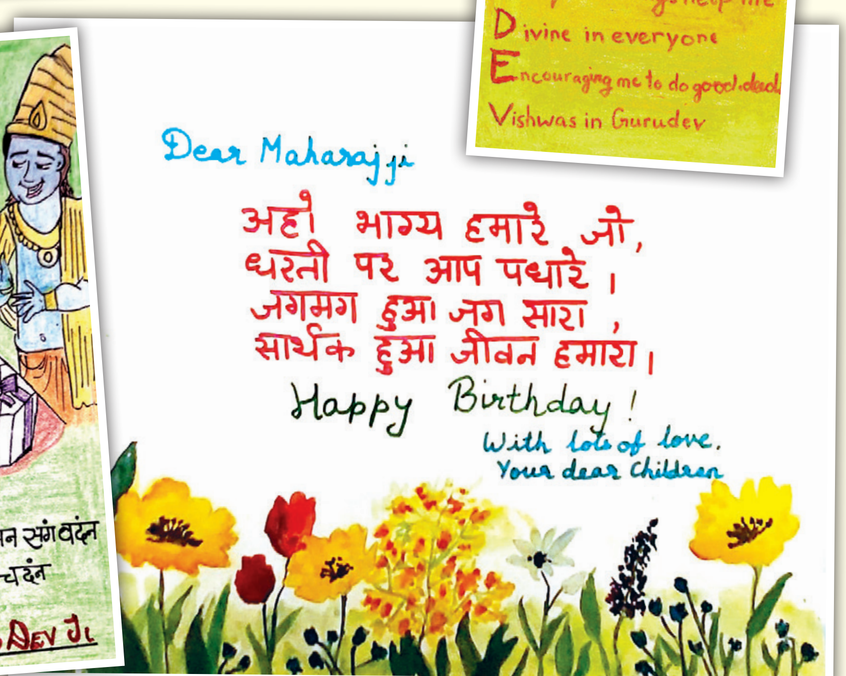

Ram-Kripa

सत्यानन्द

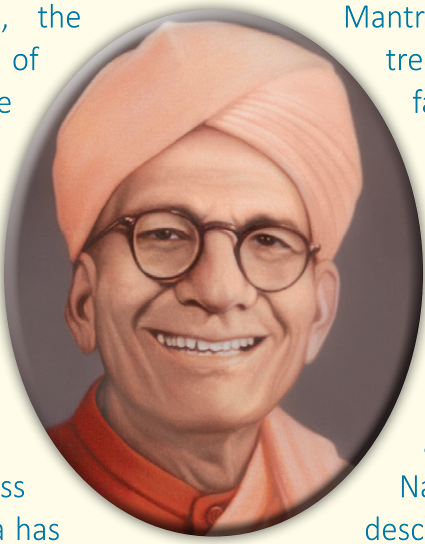

When a seed is sowed, the conducive environment of soil, water and suitable weather makes it sprout and blossom. Likewise in unison with Naam-Mantra, spiritual progress takes place by itself. Just as the powerhouse is the inexhaustible storehouse of power and the atom is the repository of limitless energy, similarly this Mantra has the power to absolve our sins and suffering and inspire noble thoughts. God manifests only according to our belief and conviction in Him. If there is no sense of conviction and we still achieve our end it is an altogether another thing, but normally if physical exercise is done with conviction, only then will the body become strong. However, if someone is running around helter-skelter in search of a job, there is no underlying feeling of physical exercise in it. Accordingly, there is no physical gain. So we should always be conscious of Divine Grace descending upon us.

Suppose someone has prefixed his village and father's name to his name, then he is always mindful of it. So also once having received the Name, one should have constant remembrance of it. Be resolute like Dhruv. Do not become wavering. Mantra is a repository, i.e., a treasure trove. But without faith it is just like the sound of an empty gun. May God give us strength- along with this prayer there must be the firm conviction that, just like on opening the windows, a gust of fresh air and light rushes in, so also by worshipping the Name, Divine Grace and Power descend upon us. Just like with the opening of doors or windows, air and light surely come in, so also know for certain that God's Grace annihilates all vices. The person opening the windows should also know that it is good for fresh air to circulate and it is harmful to sleep covering the face with a blanket. Just as on pushing the switch, electric current begins to flow spontaneously and water gushes forth on turning on the tap, so also by Ram-Naam Jaap the water of Ram-Kripa automatically begins to flow and undoubtedly His Grace descends upon us. Instill life in your Faith. When one meditates on the Name with such Faith, Devotion and reverence then Shree Ram's Grace enters through the tenth gate and paves the way for Divine knowledge, strength and bliss and one attains complete enlightenment.

Sadhana-Satsang Hansi, 22.11.1953, 11.00 a.m.
Pravachan Piyush, p. 61-62. ■

कृपा अवतरण

प्रेम

परमेश्वर के नाम में पूरा भरोसा होना चाहिए। नाम–जाप से कृपा अवतरित होती है। यह परमात्मा की देन है। यह पथ–प्रदर्शक बन कर अपने पथ पर ले चलेगा। जो जितना भी जाप करेगा थोड़ा ही है। नामी नाम में है। नाम में राम होते हैं। उसी की कृपा अवतरित होती है। अपने मार्ग पर ले जाती है। महाराज (स्वामी जी) के वाक्य हैं, ''राम सबके हृदय में रहता है। उसका आसन मानव हृदय में है।''

जब हम राम–नाम का जाप करने बैठते हैं तो कृपा शुरु हो जाती है। कभी हो नहीं सकता कि परम धाम से अवतरित राम नाम भाव–चाव से जपें और बेड़ा पार न हो।

(परम पूजनीय श्री महाराज की डायरी से, हरिद्वार, 30 जून 1966)

Excerpt from a letter from Pujniya Prem Ji Maharaj to a devotee:

'If God is very kind today- do you think He shall change? He shall always be very, very, very, very kind. Have faith and do not listen to others.' ■

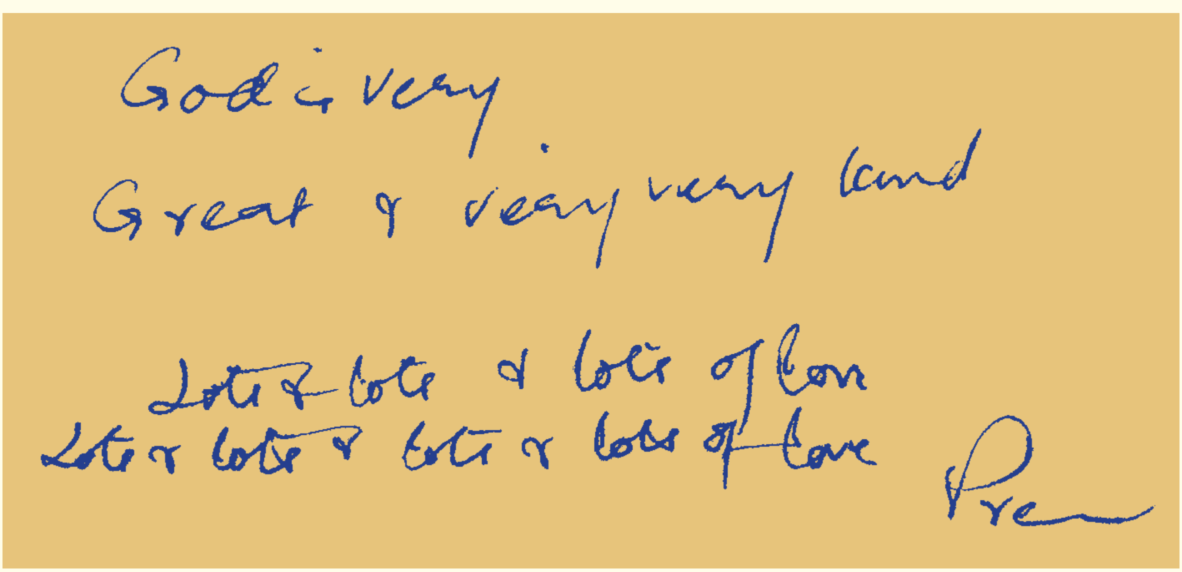

God is very
Great & very very kind

Lots & lots & lots of love
Lots & lots & lots & lots of love
Prem

राम-कृपा

विश्वामित्र

जिसके रखवाले हैं राम, उसके कौन बिगाड़े काम।

परमेश्वर से परमेश्वर की कृपा के अतिरिक्त कुछ न माँगना ही बुद्धिमता है। वही जानता है माँगने वाले का हित, मेरे बच्चे का हित किसमें है। हम तो वस्तु माँगते हैं, पर यह वस्तु माँगने वाले के लिए अनुकूल है या प्रतिकूल, यह परमात्मा ही जानता है। हम इसका अंदाज़ा नहीं लगा सकते। आपकी माँग तो वस्तु है, वह किस प्रकार का प्रभाव आप पर डालती है, वह आप नहीं जानते। आप पुत्र माँग रहे हैं, परन्तु आपको नहीं पता कि आपका पुत्र कालान्तर में आपका शत्रु बन जाएगा। अतएव, वह बेचारा दुविधा में है कि इस देवी की माँग पूरी करनी चाहिए या नहीं करनी चाहिए। इसलिए माताओ! आपसे करबद्ध प्रार्थना है कि परमात्मा कृपा से बढ़कर, उससे श्रेष्ठ कुछ नहीं है माँगने को, ''परमात्म देव! तेरी मंगलमयी कृपा मेरे ऊपर सदा बनी रहे।'' इसमें सब कुछ आ जाता है। वह जानता है कि बच्चा गोद में है, इसकी नाक बह रही है, मल मूत्र में लतपथ है, अब कृपा माँगता है बच्चा, तो उस को पता है इसकी सफाई मुझे ही करनी है, सो कृपा में सब कुछ आ जाता है। परमेश्वर

से परमेश्वर की कृपा ही माँगनी चाहिए। अपने लिए भी, औरों के लिए भी। हाँ, इतना जरुर है कि माँगने वाले पर परमात्मा की कृपा हो जाया करती है और तब एक प्रकार से उसे अधिकार मिल जाता है परमात्मा से और अधिक माँगने का। अब वह अपने लिए न माँग कर औरों के लिए माँगना शुरु कर देता है। औरों के लिए भी वह कृपा ही माँगे, बहुत अच्छी बात है, लेकिन क्योंकि उसे अधिकार इस प्रकार का मिल चुका है कि वह चीज़ें खोल कर भी परमात्मा के सामने रख सकता है। अतः औरों के लिए कभी वह वस्तु भी माँग लेता है, कभी वह व्यक्ति भी माँग लेता है, कभी कुछ कभी कुछ। अतएव, जिनका जीवन परमेश्वर की कृपा से प्रार्थनामय हो गया है, संत महात्मा फरमाते हैं कि उनसे निवेदन है कि अपने लिए कभी कोई भौतिक माँग नहीं रखनी और दूसरों के लिए माँगने में कभी कंजूसी नहीं करनी। डट कर माँगिएगा।

देवियो और सज्जनो ! सच मानो परमात्मा को बहुत अच्छा लगता है जब आप किसी और से न माँग कर, परमात्मा से ही माँगते हो। हमसे यह भूल प्रायः होती है कि हम परमात्मा से नहीं माँगते, हनुमान जी से माँगेंगे, भैरों से माँगेंगे, इधर से माँगेंगे, उधर से माँगेंगे। तनिक सोचो, एक माँ जो घर पर इंतज़ार कर रही है कि बच्चा बाहर गया हुआ है। वह भोजन तैयार करके बैठी है, आज बहुत स्वादु भोजन बनाया हुआ है। अभी चपाती नहीं बनाई, उसके आने पर गर्म–गर्म बनाएगी। सोचती है कि उसे परांठी बना कर खिलाऊँगी। वह नालायक आ कर कहे कि माँ मैं खाना बाहर खा आया हूँ तो सोचें माँ को कितना धक्का लगेगा। कहेगी तो बेचारी कुछ नहीं। कोई बात नहीं, दूध पी लो और आराम करो। ठीक इसी प्रकार से परमात्मा का बच्चा–बच्ची होने के नाते, यदि वह परमात्मा से न माँग कर इधर–उधर से माँगता रहता है, तो यह परमात्मा को अच्छा नहीं लगता। क्यों अच्छा नहीं लगता? उसे क्या फर्क पड़ता है? उसे यह फर्क पड़ता है कि एक साधक की साधना में यह सबसे बड़ी बाधा है। भगवान श्री, साधना के लिए प्रथम यात्रा के लिए निकले हैं। उन्होंने सबसे पहले एक ही बाण से दुराशा को मारा है–ताटिका को। ताटिका दुराशा है। दुराशा अर्थात जहाँ चीज़ है ही नहीं, जो मेरी इज़ाज़त के बिना दी ही नहीं जा सकती, उससे माँगना दुराशा है। आशा, निराशा और दुराशा जहाँ चीज़ है ही नहीं, जो मेरी इज़ाज़त के बिना, अनुमति के बिना दे ही नहीं सकते।

भगवान श्री गीता जी में यही कहते हैं न, जो अन्य देवी देवताओं से माँगते हैं तो उनकी उस माँग को भी मैं ही पूरी करता हूँ। गीता जी में स्पष्ट लिखा है, कोई देवी देवता मेरी इच्छा के बिना, मेरी इज़ाजत के बिना, किसी को कुछ दे ही नहीं सकता। भगवान ने बलाढ्य शब्दों में इसको स्पष्ट किया है। आप चाहते हो आपकी साधना सफल हो, तो सबसे पहले आपको दुराशा को ही मारना होगा। परमात्मा के अतिरिक्त किसी दूसरे से कुछ भी अपेक्षा रखना, आशा रखना, दुराशा है। परमात्मा इसी लिए दुःखी होता है कि इसकी साधना, इस दुर्गुण के होते सफल नहीं हो सकेगी, ये अपनी मंजिल को प्राप्त नहीं कर सकेगा। अरे! मैं बैठा हूँ न देने वाला। किस चीज़ की कमी है मेरे पास? मैं सब कुछ देने को तैयार हूँ यहाँ तक कोई मुझे खरीदने वाला हो तो मैं स्वयं बिक जाने को तैयार हूँ, मैं स्वयं अपने आपको देने को

तैयार हूँ। फिर मेरे होते हुए इधर–उधर आदमी भटकता फिरे, तो यही कहूँगा कि वह साधक अच्छा नहीं है, नालायक बच्चा है। उसकी साधना इतनी आसानी से सफल नहीं होती है। यही निष्कर्ष निकलता है, माँगना है तो परमात्मा से, और जब परमात्मा से माँगना है, तो फिर सबसे बड़ी चीज़ क्यों न माँगी जाए, जो परमात्मा से भी बड़ी है? माताओ, मैं परमात्मा की मंगलमयी कृपा को परमात्मा से भी बड़ी मानता हूँ। जो परमात्मा नहीं कर सकता, वह उसकी कृपा कर देती है। अतएव वह माँगो। जिस प्रकार परमात्मा का नाम परमात्मा से बड़ा है, ठीक इसी प्रकार परमात्मा की कृपा भी परमात्मा से बड़ी है। तो उससे, जो उससे बड़ी चीज़ है वह क्यों नहीं माँगते? वह इन्कार नहीं करता है। वही देता है।

परमात्मा के अतिरिक्त किसी दूसरे से कुछ भी अपेक्षा रखना, आशा रखना, दुराशा है। परमात्मा इसी लिए दुःखी होता है कि इसकी साधना इस दुर्गुण के होते सफल नहीं हो सकेगी, ये अपनी मंजिल को प्राप्त नहीं कर सकेगा। अरे! मैं बैठा हूँ न देने वाला। किस चीज़ की कमी है मेरे पास? मैं सब कुछ देने को तैयार हूँ यहाँ तक कोई मुझे खरीदने वाला हो तो मैं स्वयं बिक जाने को तैयार हूँ।

परमात्मा के प्रति जानकारी को ज्ञान कहा जाता है। भगवत् भक्ति के अन्तर्गत स्वामी जी महाराज ने लिखा है, कि यदि भक्ति करना चाहते हो तो, आपको परमात्मा की जानकारी पूरी होनी चाहिए। जितनी आपकी जानकारी परमात्मा के प्रति बढ़िया होगी, उतनी आपकी प्रीति परमात्मा के प्रति बढ़िया होगी। आप परमात्मा से प्रीति करना चाहते हो, अर्थात् भक्ति करना चाहते हो तो परमात्मा के विषय में आपको पूरी जानकारी होनी चाहिए। धीरे–धीरे होती रहती है। प्रीति बढ़ती जाती है, तो जानकारी भी बढ़ती जाती है। प्रीति बढ़ जाती है तो पता लगने लग जाता है, इसका स्वभाव कैसा है, यह क्या चाहता है, इसको बाहर के रोग क्या हैं, अन्दर के रोग क्या हैं। आप किसी अपने मित्र को खाने को पूरी, कचौरी, हलवा इत्यादि दें, तो वह बेचारा यही कहेगा न, कि मित्र मुझे माफ करना, डॉक्टरों ने यह सब कुछ मुझे खाने को मना किया है। मैं कुछ नहीं खा सकूँगा। ये क्यों हुआ ? इसलिए कि आपको इनके बारे में पूरी जानकारी नहीं है। पूरी जानकारी होती तो आपको पता होता कि इसे Diabetes (मधुमेह) है, थोड़ी सी Heart की Problem, इसके अन्दर ECG में थोड़ी सी changes आई हैं। अतएव इन सब चीज़ों को इसे खाने को नहीं देना।

परमात्मा से प्रीति ही, परमात्मा के ज्ञान का भी बोध करवाती जाती है। आप प्रीति बढ़ाना चाहते हो तो परमात्मा आपको अपनी जानकारी देता जाता है, ताकि आपकी प्रीति परमात्मा के प्रति और बढ़ सके। सनातन धर्म, मानव धर्म परमात्मा के तीन रुप मानता है जिसे हर एक को जानने की आवश्यकता और हर एक को याद रखने की आवश्यकता है। सर्वप्रथम, परमात्मा का निर्गुण निराकार रुप जिसे संत महात्मा लोग ब्रह्म कहते हैं। बच्चे लोग! आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण। प्रथम रुप परमात्मा का – निर्गुण निराकार। निराकार अर्थात जिसका आकार नहीं है, formless, याद रखोगे? Formless उसका form नहीं है, आकार नहीं है। निर्गुण, यानि उसके अन्दर कोई गुण नहीं

है। यह वेदान्त का concept है। ऐसे निर्गुण निराकार को ब्रह्म कहा जाता है। वेदान्त कहता है यह बात। हम तो भक्ति मार्ग के अनुयायी हैं अतः हम ब्रह्म शब्द बहुत कम प्रयोग करते हैं।

एकदा कहते हैं, किसी परमात्मा के भक्त ने, वही पूछ सकता है वेदान्ती नहीं। यदि परमात्मा से कुछ पूछना है, कोई भेद लेना है, कोई भेद की बात करनी है, कोई अपनी बात करनी है, तो भक्त ही कर सकता है। यह अधिकार ज्ञान में नहीं है, यह अधिकार प्रीति देती है। इसे भक्ति कहा जाता है। आज किसी ने पूछा, ''महाराज! एक बात बताओ, कुछ आपको निर्गुण कहते हैं, मानो आपके अन्दर कोई गुण नहीं और कुछ कहते हैं सगुण सद्गुण सम्पन्न, सर्वगुण सम्पन्न सच्चाई क्या है?'' ये भेद की बातें कोई प्यार करने वाला ही पुच–पुच कर के, तो पूछ सकता है। ''आप बताओ न आप सच में क्या हो, क्या आपमें कोई गुण है कि नहीं ? यदि हैं तो निर्गुण क्यों कहते हैं, यदि नहीं तो सर्वगुण सम्पन्न क्यों कहते हैं। मेहरबानी करके ये बात स्पष्ट करो।''

भगवान श्री मुस्कुराते हैं और वैसे ही पुच–पुच करके उत्तर देते हैं। भगवान की भगवत्ता देखो, प्रभु का प्रभुत्व देखो, महानता देखो। कहते हैं, ''वत्स! यह सच है कि मेरे अन्दर कोई गुण नहीं है।'' सर्वगुण सम्पन्न सारे गुणों का स्रोत, सारे गुणों की खान, सर्व गुणों की खान अपने मुख से कह रहा है, ''वत्स ! यह सत्य है मेरे अन्दर कोई गुण नहीं है।'' फिर ये सगुण क्यों कहते हैं, गुणवान क्यों कहते हैं। भगवान् उत्तर देते हैं,''अरे भाई! जहाँ प्रीति होती है वहाँ गुण ही गुण दिखाई देते हैं, ये भक्त लोग मेरे से इतना प्यार करते हैं कि मुझे निर्गुण होते हुए भी सद्गुणों से सम्पन्न मानते हैं।'' यह भगवान की भगवत्ता है। हमारे अन्दर कुछ भी नहीं है, फिर भी अपने आप को कितना गुणवान, गुणी इत्यादि इत्यादि कहते हैं। भगवान के पास सब कुछ है, लेकिन वह कहता है नहीं! मेरे पास कुछ नहीं है, मैं तो निर्गुण हूँ, मेरे अन्दर कोई गुण नहीं है। उस निर्गुण निराकार को ब्रह्म कहा जाता है। परब्रह्म कहा जाता है।

वही जब सगुण निराकार हो जाता है, इस श्रेणी की चर्चा बहुत पहले करी थी, नाम तो लिया था, लेकिन शायद आप को याद न हो। दो ही याद हैं, एक तो निर्गुण निराकार, दूसरा है सगुण साकार, शास्त्र भरा है इन दोनों से। लेकिन महत्वपूर्ण जो है वह तीसरा है बीच वाला है – जिसे सगुण निराकार कहा जाता है। है तो निराकार। स्वामी जी महाराज का परमात्मा सगुण निराकार है, आर्यसमाज का परमात्मा सगुण निराकार है, मुसलमानों का परमात्मा सगुण निराकार है इसे परमेश्वर, परमात्मा या ईश्वर कहा जाता है, जो सबका शासक, दिखाई नहीं देता निराकार है, आकार नहीं है, लेकिन सभी गुणों से सम्पन्न है। सच्चिदानन्दघन परमात्मा, आप बोलते हो न वन्देरामम् सच्चिदानन्दम्। वह सत् चित् आनन्द गुण हैं। दयालु है, कृपालु है, अविनाशी है, अजर है, अमर है, सर्वान्तर्यामी है, सबके अन्दर है। चूंकि निराकार है इस लिए सर्वव्याप्त है। निराकार ही सर्वव्यापक हो सकता है। आप निराकार नहीं, यहीं बैठी हैं, तो यहीं बैठी हैं आप अपने घर पर नहीं हैं। यदि निराकार होतीं, तो यहाँ भी होतीं, अपने घर पर भी बैठी होतीं। इस दूसरे रुप का नाम है ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी का प्रवचन 19-6-2010) ■

श्रीरामशरणम् गुरदासपुर : एक ऐतिहासिक विवरण

('श्रीरामशरणम् : एक ऐतिहासिक विवरण' के अन्तर्गत लेखों की अगली कड़ी)

गुरूजनों के आशीर्वाद से पंजाब में सर्वप्रथम श्रीरामशरणम् गुरदासपुर का निर्माण हुआ। पूज्यपाद स्वामी सत्यानन्द जी महाराज अक्सर गुरदासपुर आया करते और एक समय उन्होंने फरमाया कि गुरदासपुर में एक भव्य श्रीरामशरणम् का निर्माण होगा। परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के गुरदासपुर आगमन पर भी सत्संग हुआ करता।

श्रीरामशरणम् गुरदासपुर के निर्माण से पहले श्री अमृतवाणी सत्संग एक सराय में हुआ करता था और साधकों में स्पष्ट रुप में सत्संग के प्रति प्यार दिखाई देता था। वहीं पर ही 5 रात्रि साधना सत्संग श्री महाराज जी की हजूरी में हुआ करते थे। तभी से सबके मन में यह बात आई कि अपना श्रीरामशरणम् हो। श्री महाराज जी से इस बारे में प्रार्थना की गई और श्री महाराज जी ने तुरन्त इज़ाज़त दे दी और साथ ही कहा कि श्रीरामशरणम् इस प्रकार बने कि,"मैं इसे पंजाब के साधना सत्संग का केन्द्र बना सकूँ।" गुरुजनों की कृपा से ऐसा ही हुआ। पंजाब का साधना सत्संग गुरदासपुर में होता रहा है जो आज खुले सत्संग में परिवर्तित हो चुका है।

शुभ अवसर आया और पूज्यपाद स्वामी विश्वामित्र जी महाराज जी की प्रेरणा से इस पवित्र कार्य का शुभारम्भ हुआ। पूज्यपाद महाराज जी द्वारा ही बनाए जाने वाले इस श्रीरामशरणम् के लिए भूमि का चयन किया गया। जिसके लिए 2 एकड़ भूमि खरीदी गई और गुरूजनों के आशीर्वाद एवम् प्रेरणा से और साधकजनों के अपार उत्साह से, कुछ ही दिनों में इस कार्य के लिए भूमि की रजिस्ट्री श्रीरामशरणम् के नाम होने का प्रबंध हो गया।

दिनांक 20 मई 1996, को पूज्यपाद महाराज श्री के कर कमलों द्वारा इस स्थान का हवन यज्ञ के साथ भूमि पूजन किया गया एवं

आधार शिला रखी गई। इसमें हज़ारों की संख्या में साधक हर्षोल्लास के साथ सम्मिलित हुए। बहुत बड़ा टैंट लगाया गया, श्री अमृतवाणी पाठ व प्रवचन के उपरान्त पूरी व चना का लंगर हुआ। इस प्रसाद को सत्संग में सम्मिलित हज़ारों की संख्या में लोगों ने प्राप्त किया।

भूमि पूजन के उपरान्त निर्माण का कार्य तेज गति से बढ़ता गया। साधक परिवारों के साथ–साथ आसपास के लोगों ने भी भरपूर सहयोग किया। इस स्थान पर भव्य भवन बना, जिसमें सत्संग हॉल करीब एक कनाल (500 गज़) में, जाप का कमरा, पाकशाला एवं पुरुषों एवं महिलाओं के लिए दो अलग–अलग ब्लॉक बाथरूम इत्यादि की सुविधाओं के साथ निर्मित हुए। यह स्थान साधना सत्संगों के लिए निर्मित किया गया जिस में 700 के लगभग साधक ठहर सकते हैं।

श्रीरामशरणम् का उद्घाटन श्री स्वामी विश्वामित्र जी महाराज के कर कमलों द्वारा 22 जनवरी 1998 को हुआ, जिसमें दिल्ली सहित विभिन्न स्थानों से हजारों की संख्या में साधक सम्मिलित हुए। दिल्ली से महाराज जी के संग बहुत से साधक आये जिनमें विशेषतया वरिष्ठ साधक श्रीमति फूल स्याल जी एवम श्रीमति सावित्री सावनेरी जी भी पधारे। इस शुभ अवसर पर सावित्री जी ने भजन 'दरबार में मेरे सत्गुरु के दुख दर्द मिटाए जाते हैं...' अपनी मधुर वाणी में गा कर सत्संग के वातावरण को चार चाँद लगा दिए। इस उपरान्त महाराज श्री ने श्रीरामशरणम् का महत्व बताते हुए अपने प्रवचनों से सबको निहाल किया।

पूज्यपाद महाराज श्री ने फरमाया कि उन्हें आभास हो रहा था जैसे स्वामी जी महाराज बूढ़ों की तरह नहीं, जवानों की तरह अपने दोनों हाथों में अपनी खुंडी (छड़ी) ऊपर करके नाच रहे हैं। यह सुन कर सत्संग में सम्मिलित सारे साधक आनंद विभोर हो उठे।

इसके बाद तो सत्संग में साधकों की संख्या नित्य प्रतिदिन बढ़ती ही गई और पूज्यपाद महाराज श्री के आगमन पर यह स्थान भी छोटा पड़ने लगा। महाराज जी से आज्ञा ली गई और श्रीरामशरणम् के साथ लगा एक कनाल (500 गज़) का प्लाट भी खरीद लिया गया। यहाँ साधना सत्संग लगाने वालों के भारी संख्या में नाम आते और सबको साधना सत्संग लगाने की उत्सुकता रहती। श्री महाराज जी का इस स्थान और सत्संग से इतना प्रेम था, कि यहाँ से जाने के बाद गुरदासपुर सत्संग की और यहाँ के प्रबन्धों की जो उनकी निगरानी में किए जाते, अक्सर दूसरे स्थान के सत्संगों में चर्चा करते। श्री महाराज जी अक्सर फरमाया करते, ऐसा स्थान संसार भर में नहीं, It remains charged.

साधना सत्संगों में साधकों की बढ़ती संख्या को देखते हुए श्री महाराज जी ने निर्णय लिया कि अब ऐसे स्थानों पर खुले सत्संग लगाए जाएँ, जिससे अधिक साधकों को सत्संग का लाभ मिल सके। खुले सत्संग भी श्री महाराज जी ने गुरदासपुर से ही शुरू किए।

इस समय गुरदासपुर श्रीरामशरणम् में रविवार के साप्ताहिक सत्संग के अतिरिक्त, दैनिक सत्संग, विशेष दिवसों के सत्संग, शाम के जाप इत्यादि नियम से चल रहे हैं। कॅरोना महामारी के कारण कुछ सत्संग, साधकों की संख्या ज्यादा होने के कारण ऑनलाइन भी चल रहे हैं। ■

फ़िजी सत्संग

सन् 2002 में पूज्य गुरुदेव श्री विश्वामित्र जी महाराज फ़िजी पधारे जहाँ प्रवासी भारतीयों ने उनका हार्दिक स्वागत किया और नाम दीक्षा ग्रहण की। महाराज श्री को फ़िजी के लोगों की सरलता बहुत अच्छी लगी और महाराज जी आगे कुछ वर्षों तक फ़िजी लगातार जाते रहे। श्री अमृतवाणी जी का पुण्य पाठ फ़िजी के बहुत से शहरों में हुआ। छोटे–छोटे गाँव से बुजुर्ग, जवान, बच्चे और माताएँ बहुत भाव–चाव के साथ अमृतवाणी संकीर्तन में शामिल होकर आनंदित होते थे। गुरुदेव जी ने अनेक लोगों को राम नाम का प्रसाद दिया। एक सौ पचीस साल के बाद भारत से बिछुड़े फ़िजी वासियों को महाराज जी के रूप में एक सच्चे सन्त मिले। गुरुदेव को भी उनसे मिलने की उत्सुकता बनी रहती थी।

2004 की बात है। महाराज अपनी मौज में कुछ साधकों के साथ हवाईअड्डे पर जहाज़ से फ़िजी जाने का इंतजार कर रहे थे। इतने में कप्तान ने खबर दी कि हवाई उड़ान को शायद रोकना होगा क्योंकि फ़िजी में सुनामी के आने की सम्भावना है। सभी लोग घबरा गए। धीरे–धीरे भारत से फोन आने लगे, सभी चिंतित थे। महाराज जी चुपचाप बैठे रहे और राम नाम जपते रहे।

कुछ समय के बाद महाराज जी ने हम सबकी ओर देखकर मुस्कुराते हुए पूछा "ये सुनामी क्या होता है?" मानो जैसे किसी मामूली सी चीज़ के बारे में पूछ रहे हों। सुनामी के भयंकर प्रकोप को कौन नहीं जानता? एक लहर इतनी तबाही मचा देती है कि सारा फ़िजी उजाड़ के रख सकती थी। राम–कृपा ने और गुरुजनों की प्रार्थना ने सबकी रक्षा करी। पूज्यश्री के इतना कहते ही, जहाज के कप्तान ने सूचना दी कि सुनामी का खतरा मंद होने से हवाई जहाज अब फ़िजी रवाना होने के लिए तैयार है। सबके चेहरों पर खुशी की लहर छा गयी। परमात्मा देव की शक्ति ने सब कुछ तबाह होने से बचा लिया। सारे विघ्न विनाश हो गए और राम–कृपा से गुरुदेव जी के साथ सबकी यात्रा सुखद एवं सफल हुई।

फ़िजी की आगे की यात्रा में साधकजनों पर राम कृपा बरसती रही। एक हवाई अड्डे पर सब लोग अपना–अपना सामान लेकर निकल रहे थे तो पता चला की कुछ सामान गलती से ऑस्ट्रेलिया में ही रह गया था। महाराज जी ने उस समय सबको बताया की पूज्यश्री स्वामी जी महाराज जब भी यात्रा करते थे तो ट्रेन में बैठने से पहले और उतरने के बाद अपने नग गिन लिया करते ताकि कुछ पीछे न रह जाए। एक बार स्वामीजी महाराज जी का संदूक खो गया। स्वामी जी महाराज ने अपनी माला पर राम राम जपना शुरू कर दिया। महाराज जी के पास एक अंग्रेज भी उसी डिब्बे में सफर कर रहा था। उस व्यक्ति ने हैरान होकर पूछा, "क्या माला जपने से आपका संदूक मिल जाएगा?" स्वामीजी ने उत्तर में कहा–"संदूक मिले न मिले लेकिन शांति तो मिल जाएगी!"

फ़िजी में 100 से ऊपर छोटे–छोटे टापू हैं जहाँ लोग बसे हुए हैं। महाराज जी जहाज में से उन अनेक टापुओं को देखकर कहने लगे कि "परमेश्वर की सृष्टि कितनी असीम है। एक

नहीं, कई सृष्टियाँ हैं और वह सभी को चला रहा है।" महाराज श्री के श्रीमुख के ये वाक्य परमेश्वर की महानता के परिचायक हैं।

गुरुदेव सर्व शक्तियों से सम्पन्न थे, फिर भी अति विनम्र जीवन व्यतीत करते रहे और सभी को राम राम जपने की प्रेरणा देते रहे। ■

Ram-Kripa

I recall an incident from 1994. I was eleven years old. Even at that age I felt that Param Pujniya Shree Maharaj Ji had been connected with all of us as since millions of years. The unparalleled love and bliss He showered on all is difficult to be expressed and explained in words.

It was a day after Rakhi. Maharajshree had sent a sandalwood Rakhi to me through my father, who was very blessed and would often sit in His room, at His Holy Feet, have His Darshan, talk to Him and listen to Him. In those times, Pujniya Maharaj Shree used to meet anyone and everyone, daily from 4 to 6 p.m., answering their doubts, showering blessings, spreading knowledge and bliss to all who visited Him. After receiving the Rakhi, I went to have His Darshan next day. We often rushed home from school, ate a hurried lunch, completed our homework so that we could reach Shree Ram Sharnam at 4 p.m. for Pujniya Mahararj Ji's Darshan.

As I entered the room that day, His ever glorious and ever smiling face made me, like always feel on the top of the world. It appeared as though He had been waiting just for me. His smile could heal anything. I bowed down to Him and soon Pujniya Maharaj Ji asked: 'Meri rakhi mil gayi thi'. I replied, 'Hanji.' He then asked, 'Meri Raksha karoge' and I once again said 'Hanji'. With His Divine smile, he now said, 'Achha, phir theek hai.' After that I left the room as other devotees were waiting to enter.

Minutes later I realised what our conversation was about. Each time we visited Maharaj Ji, we were so overwhelmed with His Gracious smile and immersed in bliss, that we never knew what we are answering. Once I thought about it, I was overwhelmed with what had transpired. A few days later, during Jaap, Pujniya Shree Maharaj Ji was strolling outside the hall with His long 1000 manka mala. He was encouraging and rewarding at the same time all those present to do more jaap.

I had carried with me a slip of paper in which I had written 'Aap hi sabke rakhshak hain' and as soon as I got an opportunity. I hesitantly gave Him the slip. Immediately Pujniya Maharar Ji replied, 'Nahi jo us din kaha tha wahi sahi tha.'

I had no answers and I silently and thoughtfully went into the hall. I am still searching for the answer and the meaning of what my Pujniya Maharaj Ji meant that day.

I now feel that we were experiencing what Saints achieved after many years of penance when God appeared before them with His smiling face. We experienced the same satisfaction and divinity every moment we spent with HIM and we continue to feel the same in HIS unseen presence even now. ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

जनवरी से मार्च 2021

- **फरीदाबाद**, हरियाणा में 26 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 56 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बंगा**, पंजाब में 7 फरवरी को अमृतवाणी सत्संग हॉल का उद्घाटन सम्पन्न हुआ जिसमें 26 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रोहतक**, हरियाणा में 1 जनवरी से 21 फरवरी तक प्रातः 8 बजे से रात्रि 10 बजे तक राम–नाम जाप हुआ। 21 फरवरी को सत्संग के पश्चात् 251 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रामतीर्थ**, मध्यप्रदेश में 22 फरवरी को सत्संग के उपरान्त 323 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **अमरपाटन**, मध्यप्रदेश में 27 फरवरी से 1 मार्च तक श्रीरामशरणम् के उद्घाटन की प्रथम वर्षगांठ पर तीन दिवसीय विशेष कार्यक्रम के उपरान्त नाम दीक्षा का कार्यक्रम हुआ।
- **दिल्ली** श्रीरामशरणम् में जनवरी, फरवरी में 40 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **धारीवाल**, पंजाब में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य पूर्ण हो गया है और कोविड महामारी के हालात सुधरने पर श्रीरामशरणम् के विधिवत उद्घाटन की तिथि निश्चित होगी।
- **तारागढ़**, पंजाब में नवनिर्माणाधीन श्रीरामशरणम् का कार्य चल रहा है और शीघ्र लैंटर पड़ने की सम्भावना है।

श्री अमृतवाणी पाठ

कॅरोना महामारी को मूल से हटाने के लिए देश विदेश के साधक परम प्रभु देवाधिदेव करुणा सागर, दयालु, कृपालु परमेश्वर के दरबार में प्रार्थना के रुप में श्री अमृतवाणी के पाठ और नाम–जाप कर रहे हैं। ये जाप व पाठ Lockdown लगने के तुरन्त बाद से शुरु हो गए। अब्दुल्लागंज, अहमदाबाद, अमरपाटन, बिलासपुर, बेहरीन, भोपाल, चण्डीगढ़, दिल्ली, फरीदाबाद, गोआ, ग्वालियर, गुरुग्राम, होशियारपुर, होशंगाबाद, हिमाचल, हरिद्वार, ईचलकरंजी, जम्मू, जबलपुर, कण्डाघाट, मनाली, मण्डी, सुन्दरनगर, मुम्बई, नागोद, नोयडा, रामतीर्थ, पटियाला, पुणे, पठानकोट, रतनगढ़, रतलाम, सरदारशहर, सतना, सिंगापुर, सूरत, उज्जैन, लण्डन आदि केन्द्रों से लगातार जाप व पाठ की गिनती की सूचना आ रही है।

7 जनवरी 2021 तक कुल जाप की संख्या 150,05,75,000 (एक अरब पचास करोड़ पाँच लाख और पचत्तर हज़ार) हो गई थी। अब जाप को विश्राम दे दिया गया है।

11 फरवरी 2021 तक श्री अमृतवाणी पाठ की संख्या 20,97,660 (बीस लाख सत्तानवें हज़ार छः सौ साठ) हो गई है। यह पाठ अभी भी चल रहे हैं। जो साधक इसमें अपना योगदान देना चाहते हैं, कृपया वे श्री अमृतवाणी पाठ की गिनती अपने स्थानीय प्रबन्धक के माध्यम से श्रीरामशरणम् दिल्ली भेज सकते हैं।

Online programmes held from 31 December 2020 till 11 February 2021

With the Grace of Param Pujyniya Gurujans, all daily Satsangs, weekly Satsangs and special Satsangs have being held online through Shree Ram Sharnam's official Facebook and YouTube channel. On the occasion of new year, more than one lakh people were reached on both social media platforms. Over 13,375 people attended the Satsang. Sundarkand path held on 2 January, 2021 was attended by 4,058 sadhaks on both social media platform. Sunday Satsang on 17 January 2021 was attended by 8412 persons. Regular daily Satsangs have been attended on an average by 4,251 and Sunday Satsangs by 6,520 sadhaks. ■

The Story of Holi

God loves His devotees as much or even more than the devotees love their God. His Love and Grace manifests in many forms. He can be as playful as Lord Krishna was with Radha or as protective as Lord Vishnu with His Bhakt Prahlad.

A long long time ago, there was a king called Hiranyakashyap. He was very powerful and ruled over many lands. He became very proud of his power and wanted to be worshipped like God. He ordered his subjects to stop worshipping any Gods and only pray to him instead. People were very afraid of him and followed his orders. The only person who refused to obey his orders was his son Prahlad. Prahlad was an ardent devotee of Lord Vishnu. He continued to worship Lord Vishnu even when it angered his father. After many warnings, King Hiranyakashyapa decided to kill his son and asked for his sister Holika's help. Holika had a boon that she could not be harmed by fire. She took Prahlad in her lap and stepped into a big bonfire.Prahlad kept praying to Lord Vishnu as he was taken into the fire. The Lord came to his rescue and Prahlad came out of the fire unharmed while Holika was burnt to ashes. This is why the festival of holi is celebrated by lighting a bonfire to depict Holikadahan and to remind us of the strength of devotion to God. A true bhakt is always protected by God even through the biggest difficulties.

The festival of Holi is also celebrated by playing with colors. This part of the celebration has its origin in the play of Lord Krishna and Radha. It is said that Lord Krishna was disappointed because his skin was dark in color while Radha was light-skinned. This is why, in one of His playful moods, He decided to color Radha. The play with colors on the day of Holi reminds us of the Lord's love for His devotees.

In Shree Ram Sharnam, we celebrate Holi with Satsang, which you will enjoy attending, so do make it a point to attend it when it is held.

Naam Deeksha in Shree Ram Sharnam, Delhi (April to July 2021)		
April	11 Sunday	10.30 am
May	9 Sunday	10.30 am
July (Guru Poornima)	24 Saturday	4:00 pm

Purnima (April to June 2021)		
April	27	Tuesday
May	26	Wednesday
June	24	Thursday

Sadhna Satsang (April to July 2021)		
Haridwar	30 June to 3 July	Wednesday to Saturday
Haridwar	19 to 24 July	Monday to Saturday
Please note that these dates are tentative and will be finalised depending upon Covid-19 situation.		

Quiz for Children on the auspicious occasion of the 81 Birthday of Param Pujniya Maharaj Ji.

We are celebrating the 81 Birthday of Param Pujniya Maharaj Ji. This day is very auspicious and special for us all at Shree Ram Sharnam. On this occasion, here is a fun quiz for you all to answer. Please choose the correct answer out of these multiple choices which are given.

1) What is the day of birth of Param Pujniya Maharaj Ji

a) March 15
b) Dec 9
c) July 2
d) April 15

2) Do you know the year in which Pujniya Maharaj Ji was born?

a) 1950
b) 1943
c) 1955
d) 1940

3) In which city, state was Pujniya Maharaj Ji born? Take a guess

a) Sujanpur, Punjab
b) Narowal, Pakistan
c) Manali, Himachal
d) Lahore, Pakistan

4) Which was the highest educational qualification that Pujniya Maharaj Ji attained?

a) Masters
b) Engineering
c) MBBS
d) Ph.D

5) Do you know where Pujniya Maharaj Ji worked?

a) AIIMS
b) RML
c) LNJP
d) PGI

6) Where did Pujniya Maharaj Ji take "Naam Diksha" from Gurudev Param Pujniya Prem Ji Maharaj?

a) Delhi
b) Haridwar
c) Hisar
d) Manali

7) Do you know where Pujniya Maharaj Ji spent time doing sadhna before he came to Shree Ram Sharnam as Guru?

a) Delhi
b) Haridwar
c) Hisar
d) Manali

8) When is Pujniya Maharaj Ji's Tilak Diwas

a) March 15,1993
b) Dec 9, 1993
c) July 2, 1993
d) April 15, 1993

9) Pujyniya Maharaj Ji took Param Samadhi during a Sadhna Satsang. Do you know which Satsang it was?

a) Holi
b) Ramayani
c) Guru Purnima
d) Chaitra Purnima

Hope you enjoyed this quiz!

Answers: 1-a, 2-d, 3-b, 4-d, 5-a, 6-c, 7-d, 8-b, 9-c

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित
एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर-4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा-122051 से मुद्रित। संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924